तारों का उपहार

एक समय की बात है कि एक नन्हीं लड़की थी जो बिलकुल अकेली और बहुत गरीब थी. रहने के लिए उसके पास कोई जगह न थी. उसके पास बस वह कपड़े थे जो उसने पहन रखे थे, सिर पर बाँधने के लिए एक स्कार्फ था और खाने के लिए एक रोटी का टुकड़ा.

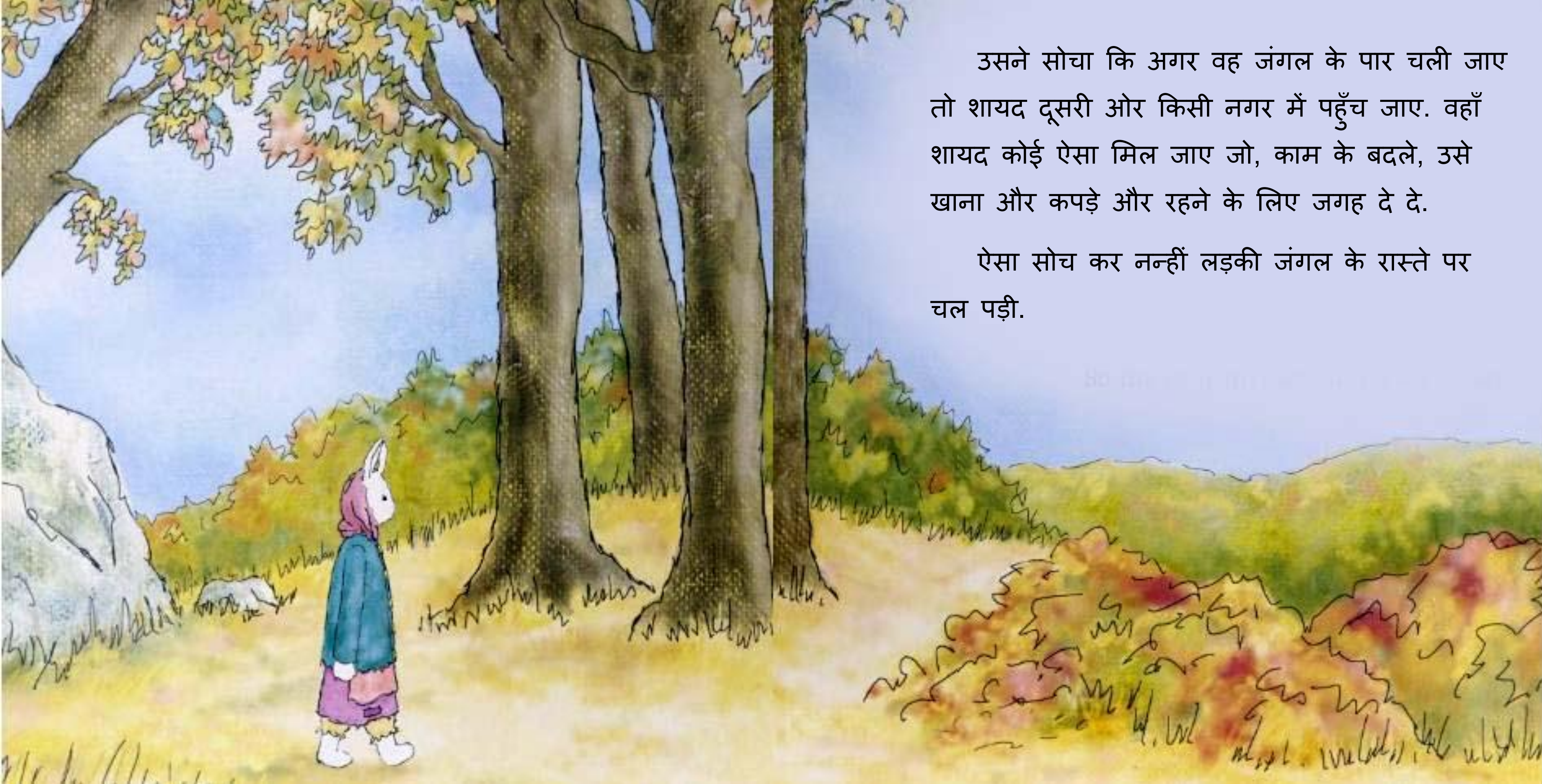

उसने सोचा कि अगर वह जंगल के पार चली जाए तो शायद दूसरी ओर किसी नगर में पहुँच जाए. वहाँ शायद कोई ऐसा मिल जाए जो, काम के बदले, उसे खाना और कपड़े और रहने के लिए जगह दे दे.

ऐसा सोच कर नन्हीं लड़की जंगल के रास्ते पर चल पड़ी.

वह जंगल में अधिक दूर न गई थी कि उसे एक भिखारी मिला. “नन्हीं लड़की,” उसने कहा. “मुझे बहुत भूख लगी है. प्लीज़ मुझे अपना रोटी का टुकड़ा दे दो ताकि मैं भूखा न मर जाऊँ.”

नन्हीं लड़की को भी बहुत भूख लगी थी. लेकिन वह बहुत दयालु और निस्स्वार्थ थी. उसने रोटी का टुकड़ा भिखारी को दे दिया और आगे चली गई.

वह बहुत देर तक चलती रही और थकने लगी. लेकिन आराम करने के लिए वह रुक न सकती थी क्योंकि वह अभी जंगल के अंदर ही थी और अँधेरा होने वाला था.

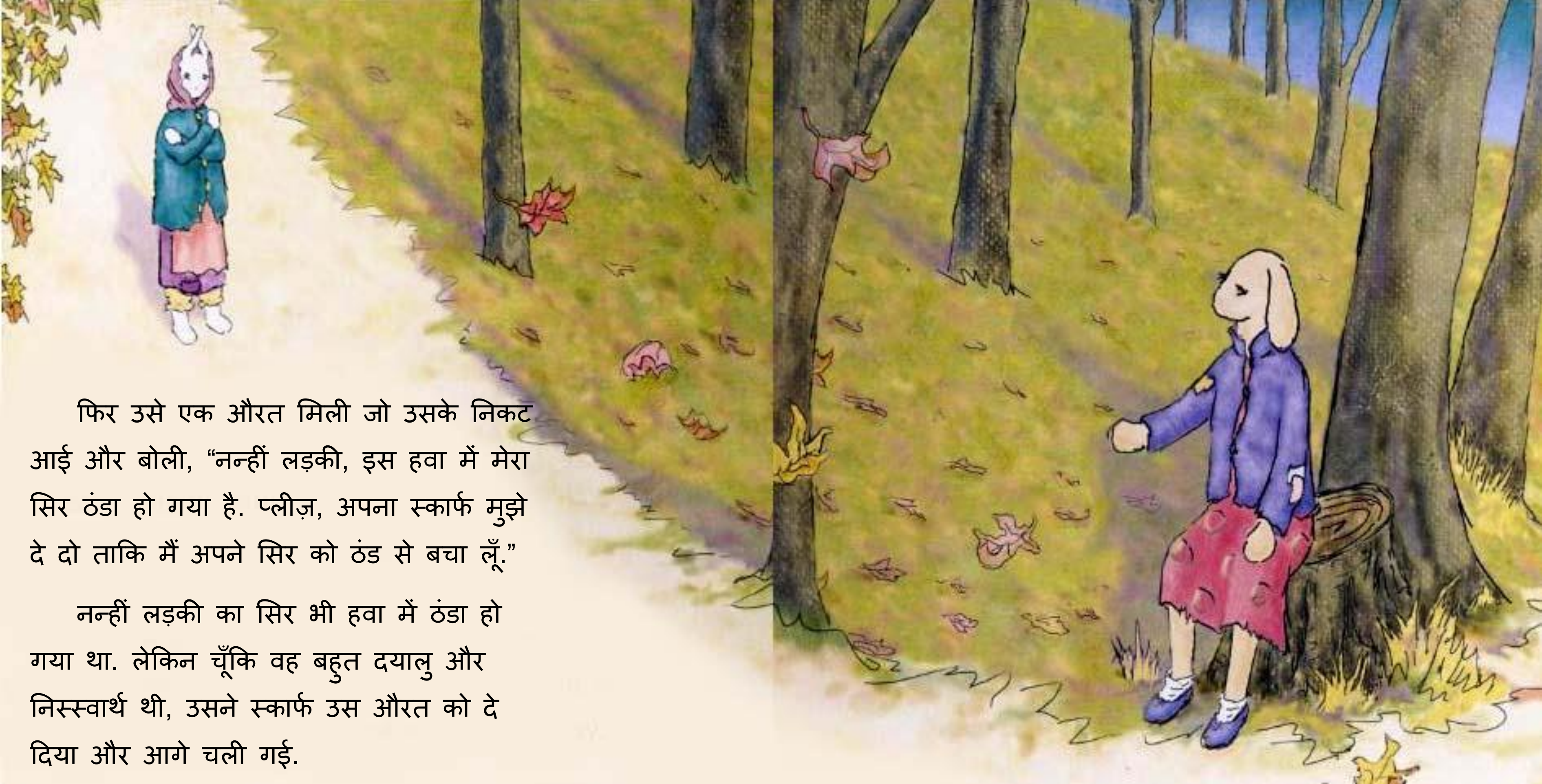

फिर उसे एक औरत मिली जो उसके निकट आई और बोली, "नन्हीं लड़की, इस हवा में मेरा सिर ठंडा हो गया है. प्लीज़, अपना स्कार्फ मुझे दे दो ताकि मैं अपने सिर को ठंड से बचा लूँ."

नन्हीं लड़की का सिर भी हवा में ठंडा हो गया था. लेकिन चूँकि वह बहुत दयालु और निस्स्वार्थ थी, उसने स्कार्फ उस औरत को दे दिया और आगे चली गई.

अब अँधेरा होने लगा था. लेकिन इस आशा से कि रात काटने के लिए उसे कहीं कोई आश्रय मिल जाए, नन्हीं लड़की चलती रही. शीघ्र ही उसे एक छोटा लड़का मिला.

बच्चा ठंड से काँप रहा था, उसने नन्हीं लड़की से कहा, “मुझे बहुत ठंड लग रही है. तुम्हारी जैकेट मुझे ठंड से बचा सकती है. प्लीज़, क्या मैं इसे ले सकता हूँ?” यद्यपि नन्हीं लड़की जानती थी कि जैकेट के बिना वह ठिठुर जायेगी, उसने जैकेट छोटे बच्चे को दे दी और आगे चलती गई.

अब तक बहुत अँधेरा हो गया था, बहुत ठंड भी हो गई थी. नन्हीं लड़की जंगल के बीच में थी, तभी उसे एक और बच्चा मिला.

यह बच्चा सिमट कर पेड़ के साथ बैठा था और ठंड से जम सा गया था. और जब बेचारी नन्हीं लड़की ने उसे देखा तो उसने कहा, “मेरे कपड़े ले लो, यह तुम्हें ठंड से बचायेंगे.”

वह जानती थी कि अगर उसने अपने कपड़े उसे दे दिए तो पहनने के लिए उसके पास बस एप्रन ही बचेगा. लेकिन चूँकि वह बहुत दयालु और निस्स्वार्थ थी, उसने अपने कपड़े छोटे बच्चे को दे दिए और आगे चली गई.

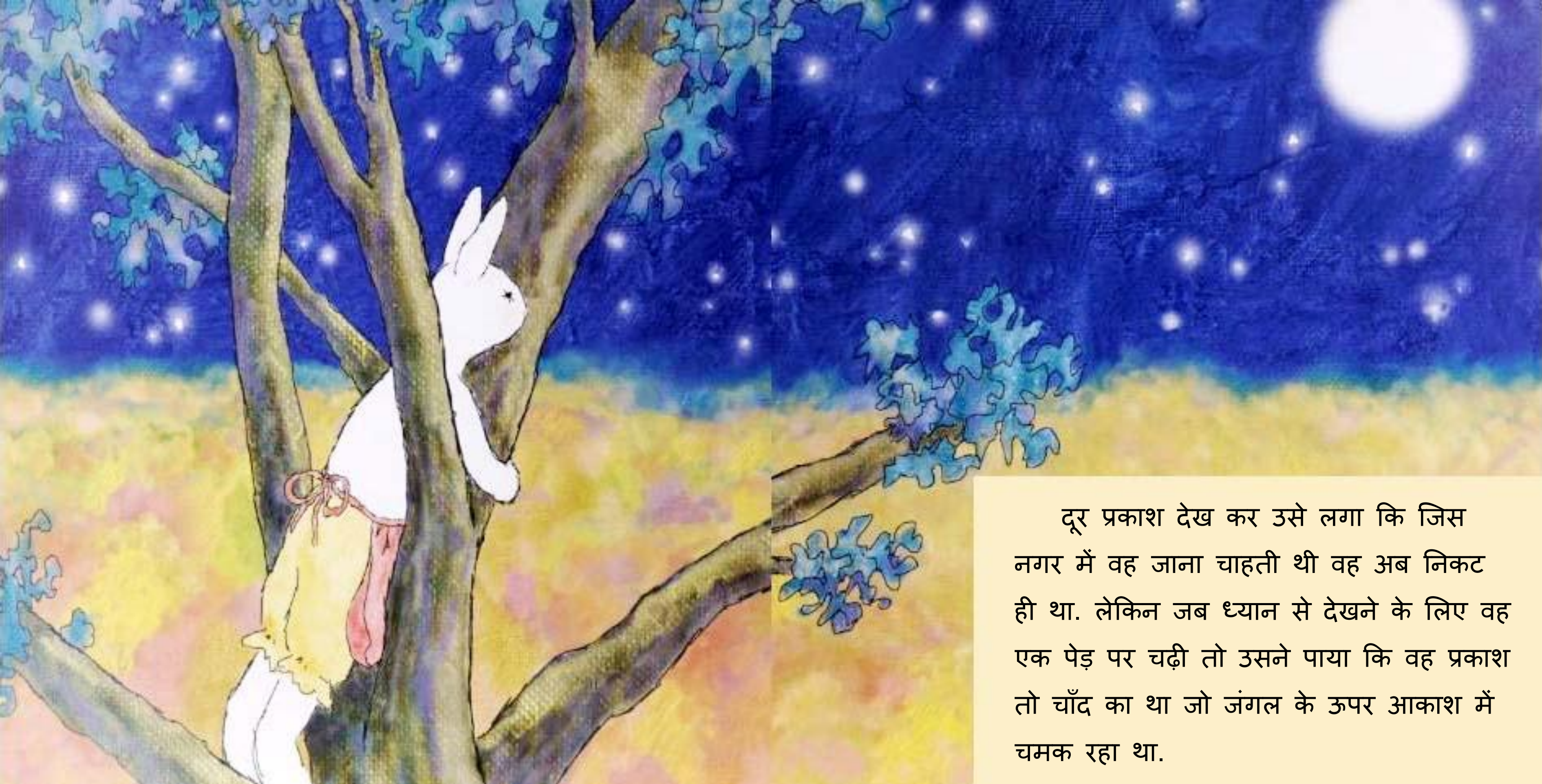

दूर प्रकाश देख कर उसे लगा कि जिस नगर में वह जाना चाहती थी वह अब निकट ही था. लेकिन जब ध्यान से देखने के लिए वह एक पेड़ पर चढ़ी तो उसने पाया कि वह प्रकाश तो चाँद का था जो जंगल के ऊपर आकाश में चमक रहा था.

नन्हीं लड़की को बहुत ठंड लग रही थी. वह बहुत थक भी गई थी. वह एक पेड़ के नीचे बैठ गई, अपना एप्रन उसने अपने शरीर पर लपेट लिया और ठंड से बचने के लिए अपने को पत्तों से ढकने का उसने प्रयास किया. आज से पहले इतनी ठंड और दुर्बलता उसने कभी महसूस न की थी.

फिर नन्हीं लड़की रोने लगी क्योंकि वह बहुत भयभीत और अकेली थी. रोते-रोते उसने ऊपर आकाश की ओर देखा और सोचने लगी कि उसका क्या होगा. आकाश में सुंदर तारों देख कर उसने मन ही मन एक कामना की और फिर सो गई.

जब एक तारा आकाश से नीचे गिरा तो अचानक नन्हीं लड़की की नींद खुल गई.....एक और तारा गिरा, फिर एक और.

सुंदर, चमकीले तारे उसके आसपास धरती पर गिर रहे थे. आश्चर्य से उन्हें देखते हुए वह झटपट खड़ी हो गई.

नन्हीं लड़की तारों को अपने एप्रन में इकट्ठे करने लगी. शीघ्र ही उसका एप्रन जगमगाने लगा. फिर जैसे किसी जादू से तारों ने उसके सामने रास्ते को प्रकाशित कर दिया और उसे गर्मी से ढक दिया.

तारे गिरते रहे और जंगल में उन्होंने एक पथ बना दिया. फिर दूर से आती संगीत की मध्यम ध्वनि नन्हीं लड़की को सुनाई देने लगी. तारे आगे जाने लगे जैसे कि वह नन्हीं लड़की को रास्ता दिखा रहे थे. उनके प्रकाश और गर्मी के पीछे-पीछे वह चलती गई.

जैसे वह आगे गई, संगीत की ध्वनि तेज़ हो गई. शीघ्र ही वह एक छोटे से घर के निकट आ पहुँची, जिसकी चिमनी से धुआँ निकल रहा था. उसने एक परिवार को उस घर के बरामदे में संगीत बजाते देखा.

वह घर की ओर चलने लगी. तारे जिस तरह अचानक प्रकट हुए थे उसी तरह अचानक गायब हो गये. घर के भीतर से आते हुए प्रकाश के अतिरिक्त कोई प्रकाश वहाँ न था और जंगल में अँधेरा हो गया.

इसके पहले कि वह कुछ कहती संगीत बंद हो गया. जैसे ही उसने परिवार की ओर देखा उसने एक मधुर आवाज़ सुनी, “हैलो, नन्हीं लड़की! तुम कहाँ से आई हो? तुम अकेली लगती हो. तुम भूखी हो और तुम्हें ठंड भी लग रही है. अपने घर में हम तुम्हारा स्वागत करते हैं. प्लीज़, अंदर आ जाओ, हम तुम्हें खाने के लिए कुछ देंगे और ठंड से भी बचायेंगे.”

नन्हीं लड़की को अपने कानों पर विश्वास न हुआ क्योंकि वह इसी बात की कामना कर रही थी.

वह घर के अंदर आई. शीघ्र ही एक गर्म कंबल लपेटे वह आग की निकट बैठे कर सेब का जूस पी रही थी और मफ्फिन खा रही थी. परिवार ने उसके लिए सुंदर संगीत बजाया और उसने उन्हें अपनी कहानी सुनाई कि किस प्रकार वह तारों के प्रकाश के पीछे-पीछे चलते हुए उनके घर पहुंची थी.

उसे पता न था कि उस परिवार ने भी एक कामना की थी. उन्होंने कामना की थी कि एक बच्ची उनके परिवार में आये, उसके जैसी एक नन्हीं लड़की. हालाँकि उन्होंने प्रकाश से बने पथ को न देखा था, न ही टिमटिमाते तारों को देखा था, लेकिन वह जानते थे कि वह नन्हीं लड़की उनके पास किसी विशेष कारण से भेजी गई थी....उस रात उनकी कामना पूरी हो रही थी. क्योंकि वह दयालु और निस्स्वार्थ लड़की थी, परिवार उससे बहुत प्यार करने लगा था. उन्होंने उससे कहा कि वह सदा के लिए उनके साथ रहे. नन्हीं लड़की प्रसन्नता से राज़ी हो गई.

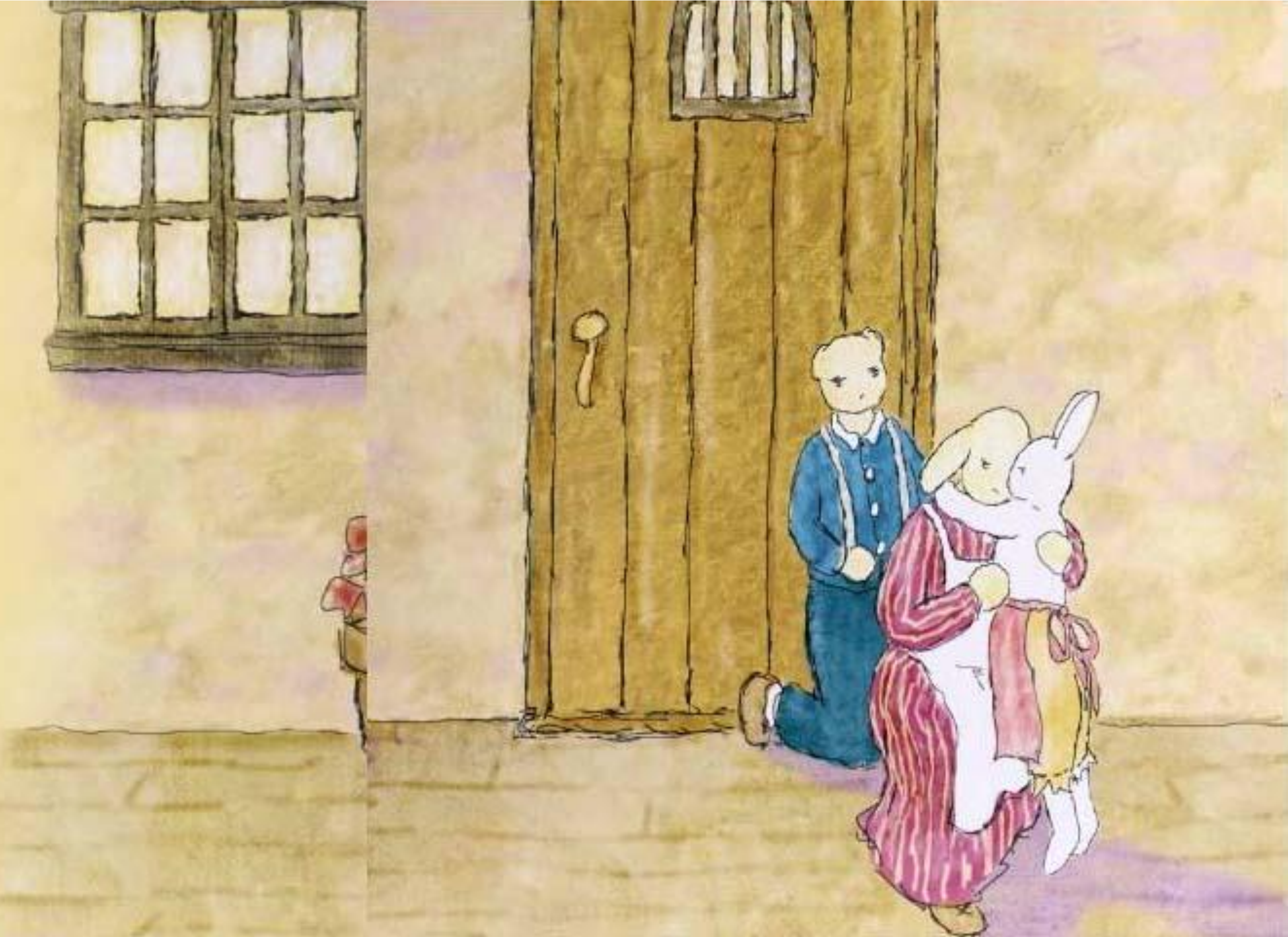

सब के लिए वह एक बहुत ही आश्चर्यजनक रात थी, उनका घर खुशियों से भर गया था, लेकिन मन ही मन हर कोई सोच रहा था.......क्या सच में आकाश के तारे नन्हीं लड़की का सारे रास्ते ध्यान रख रहे थे? क्या तारों ने निस्स्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करते हुए उसे देखा था? क्या तारे आकाश से नीचे आकर उसको रास्ता दिखा रहे थे? या यह सब उसने सपने में देखा था?

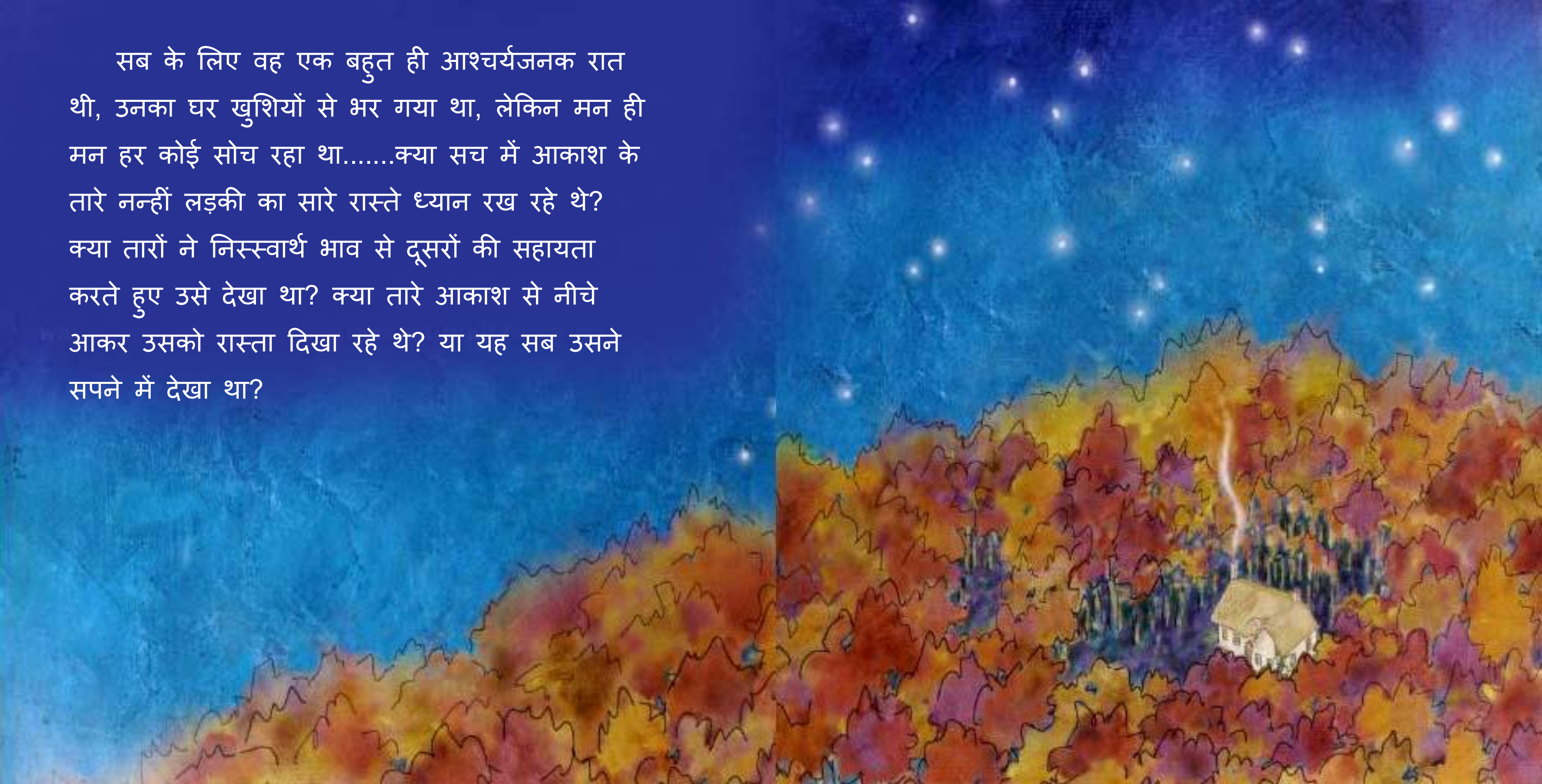

इन प्रश्नों का उत्तर उस रात बाद में मिला जब परिवार ने उसे आरामदायक बिस्तर में लिटा दिया. उन्होंने उसे एक कंबल से ढक दिया. तब नन्हीं लड़की ने अपने एप्रन की जेब में एक चीज़ महसूस की. जैसे ही उसने वह चीज़ जेब से निकली तो कमरा प्रकाश से भर गया और सैंकड़ों तारे नीचे गिर कर कमरे में बिखर गये. एक बार फिर संगीत सुनाई दिया. लेकिन इस बार संगीत आकाश से आ रहा था.

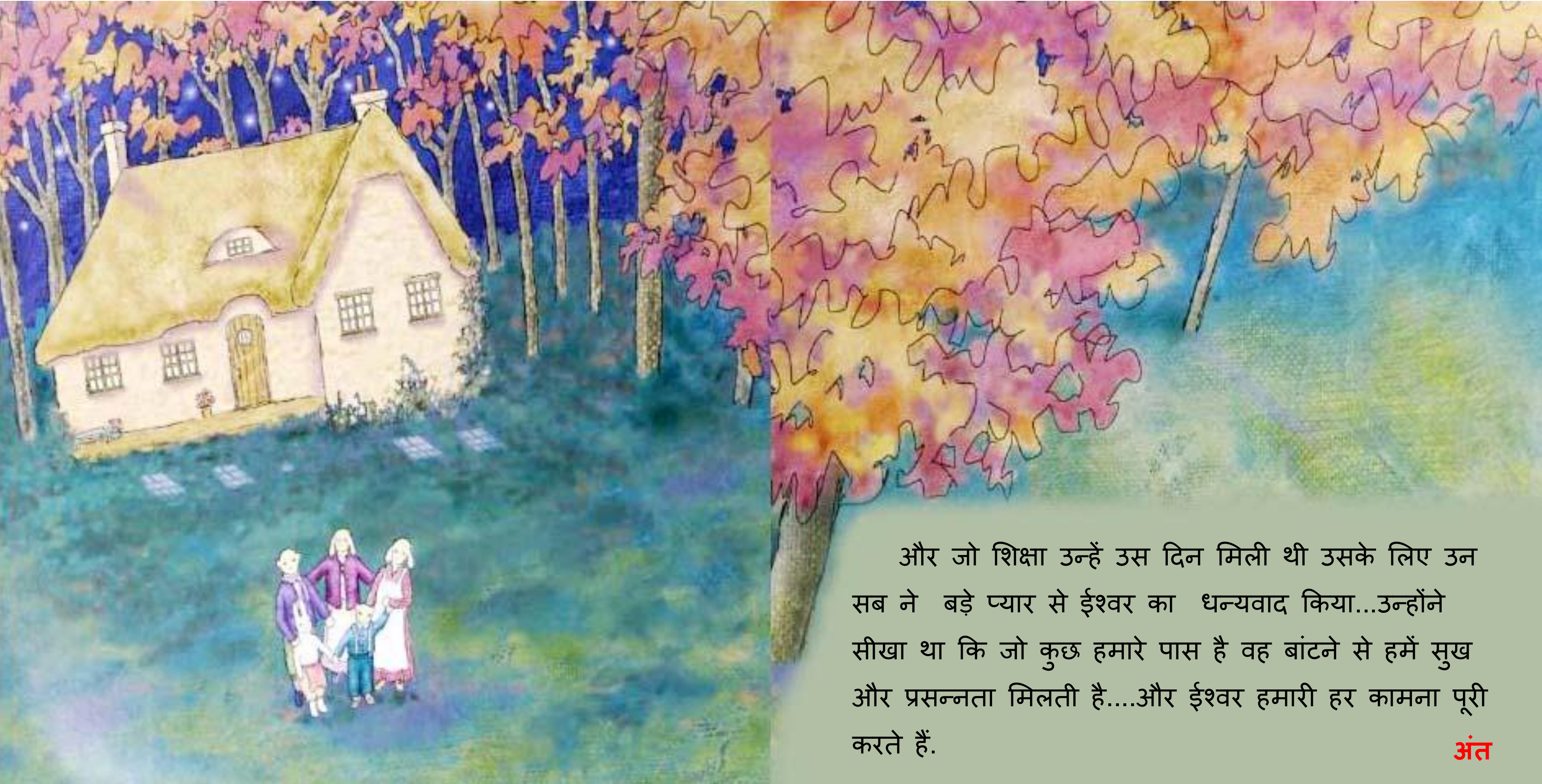

और जो शिक्षा उन्हें उस दिन मिली थी उसके लिए उन सब ने बड़े प्यार से ईश्वर का धन्यवाद किया...उन्होंने सीखा था कि जो कुछ हमारे पास है वह बांटने से हमें सुख और प्रसन्नता मिलती है....और ईश्वर हमारी हर कामना पूरी करते हैं.

अंत